Topic 75

परस्मैपद प्रक्रिया

अनुपराभ्यां कृञः ।

कर्तृगे च फले गन्धनादौ च परस्मैपदं स्यात् । अनुकरोति । पराकरोति ।

कर्तृगामी क्रियाफल में और गन्धन आदि अर्थों में भी 'अनु' और 'परा' पूर्वक 'कृञ' धातु के बाद परस्मैपद आता है। यह पूर्वसूत्र का अपवाद है। उदाहरण के लिए लट् लकार के प्रथमपुरुष - एकवचन में 'अनु' पूर्वक 'कृ' धातु से परस्मैपद तिप् होकर 'अनु कृ ति' रूप बनता है। तब उ - प्रत्यय और गुण आदि होकर 'अनुकरोति' रूप सिद्ध होता है, इसी प्रकार 'परा' पूर्वक पराकरोति रूप बनता है, जिसका अर्थ है - दूर करता है।

अभिप्रत्यतिभ्यः क्षिपः ।

क्षिप प्रेरणे । स्वरितेत् । अभिक्षिपति ।

प्राद् वहः ।

प्रवहति ।

परेर्मृषः ।

परिमृष्यति ।

व्याङ्परिभ्यो रमः ।

रमु क्रीडायाम् । विरमति ।